Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

B. A. Part – III (Hons)
Paper – V
Philosophy of Religion

"Relation of Religion to Theology" 1

1. 'धर्म-दर्शन' और 'ईश्वर-शास्त्र' के बीच सम्बन्ध :-

धर्म-दर्शन और ईश्वर शास्त्र के बीच कुछ विषयों में समानता है तो कुछ विषयों में विभिन्नता भी है।

ईश्वर शास्त्र ईश्वर विषयक प्रश्नों का समाधान करता है। अरस्तु के प्राथमिक दर्शनशास्त्र का अन्त ईश्वर विचार में होता है जो शुद्ध आकार का संकेत करता है। प्लेटो के चरम शुभ का विचार ईश्वर का संकेत करता है। प्लेटो एवं अरस्तु के अतिरिक्त अन्य विचारकों ने ईश्वर-शास्त्र को अपनाया है। ऐसे विचारकों में स्पीनोज़ा, लॉक, बर्कले, ह्यूम आदि प्रमुख हैं। इसके बावजूद दर्शन-शास्त्र को ईश्वर-शास्त्र से भिन्न बतलाया जाता है।

ऐतिहासिक रूप से ईश्वर-शास्त्र को दो वर्गों में बाँटा जाता है :→

1. प्राकृतिक ईश्वर-शास्त्र (Natural Theology)
~~2. प्रकाशित ईश्वर-शास्त्र~~
2. प्रकाशित ईश्वर-शास्त्र (Revealed Theology)

प्रकृतिक ईश्वर-शास्त्र ईश्वर का बौद्धिक तथा दार्शनिक विवेचन करता है।

प्रकाशित ईश्वर-शास्त्र भिन्न धर्मों के ईश्वर-विचार को समष्टिमात्र को कहा जाता है।

कुछ विचारकों ने प्रकाशित ईश्वर-शास्त्र में अन्धविश्वास का पुट माना है। जितनी कृपा है उतनी ही प्रकाशित ईश्वर-शास्त्र है। ईसाई, इस्लाम, पारसी, हिन्दु आदि लोगों के प्राकृतिक ईश्वर-शास्त्र पृथक-पृथक है। यहाँ बाइबिल कुरान जैसे धार्मिक पुस्तकों में विश्वास रखकर धार्मिक समस्याओं का समाधान किया जाता है। प्रकाशित ईश्वर-शास्त्र को इत्यादि- ईश्वर शास्त्र कहा जाता है जबकि प्राकृतिक ईश्वर शास्त्र को धार्मिक दर्शन कहा जाता है।

"Religion is a man's faith in a power beyond himself whereby he seeks to satisfy his emotional needs and gain stablity of life and which he expresss in acts of worship and service.

धर्म-दर्शन के अन्दर सभी प्रकार की धार्मिक समस्याएँ धार्मिक अनुभूतियाँ आ जाती है। ईश्वर के अतिरिक्त अशुभ, अमरता आदि समस्याओं का समाधान धर्म-दर्शन में होता है। इसके विपरीत ईश्वर-शास्त्र किसी विशेष धर्म या उनसे

सम्बन्धित किसी समस्या का समाधान करता है। ईश्वर-शास्त्र का ईश्वर किसी विशेष सम्प्रदाय तक सीमित होता है। अतः यह स्पष्ट होता है कि धर्म दर्शन का क्षेत्र ईश्वर-शास्त्र के क्षेत्र से अधिक व्यापक है।

धर्म-दर्शन अपनी विषय वस्तु की व्याख्या कर उसकी आलोचना प्रस्तुत करता है, उसका अर्थ स्पष्ट करता है और उसका मूल्य निर्धारित करता है। ईश्वर-शास्त्र दूसरी ओर अपने धर्म में कही गयी बात पर विश्वास करता है इससे प्रमाणित होता है कि धर्म-दर्शन का आधार बुद्धि है जबकि ईश्वर शास्त्र का आधार विश्वास है।

धर्म-दर्शन धर्म सम्बन्धी सत्यता को बुद्धि तथा तर्क के माध्यम से प्रस्थापित करता है। ईश्वर-शास्त्र इसके विपरीत धर्म सम्बन्धी सत्यता की स्थापना श्रुति स्मृति परम्परा तथा विश्वास के द्वारा करता है। ईश्वर-शास्त्र तर्क के द्वारा धार्मिक सत्य को अप्राप्य मानता है।

ईश्वर-शास्त्र की अपेक्षा धर्म-दर्शन का स्तर द्वितीय है। ईश्वर-शास्त्र धर्म-दर्शन को सामग्री प्रस्तुत करता है जिसके फलस्वरूप धर्म-दर्शन धर्म का

दार्शनिक विवेचन करता है। धर्म-दर्शन तर्क युक्त होता है। ईश्वर-शास्त्र का स्थान धर्म-दर्शन की अपेक्षा प्रथम है। यह धर्म-दर्शन को सामग्री प्रदान करता है। ईश्वर-शास्त्र के अभाव में धर्म-दर्शन की कल्पना सम्भव नहीं है। ईश्वर-शास्त्र भावनामूलक होता है।

ईश्वर-शास्त्र धर्म का पक्षपातपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत करता है। ईश्वर-शास्त्री अपने को किसी-न-किसी धर्म से सम्बद्ध पाता है तथा वह उसी धर्म के अध्ययन से सन्तुष्ट रहता है। धर्म-दर्शन इसके विपरीत सभी धर्मों अथवा अनेक धर्मों में समाविष्ट सामान्य सिद्धान्तों की खोज करता है। धर्म-दर्शन अपनी विषय-वस्तु की निष्पक्ष व्याख्या प्रस्तुत करता है। यह किसी विशेष धर्म का पक्षपात नहीं करता है। धर्म-दर्शन और ईश्वर-शास्त्र में यही मुख्य अन्तर है।

धर्म-दर्शन सभी धर्मों का मूल्यांकन करता है यह निरीश्वरवादी धर्मों को भी समान महत्त्व देता है। ईश्वर-शास्त्र इसके विपरीत ईश्वर केन्द्रित है। यह ईश्वर विहीन धर्म को भी धर्म की कोटि में

रखना भ्रामक समझता है।

धर्म-दर्शन का उद्देश्य व्यावहारिक नहीं है। यह धार्मिक अनुभूतियों की स्वतंत्र व्याख्या तथा आलोचना करता है। धर्म-दर्शन को धर्म-विशेष के प्रति पक्षपात नहीं रहता है। यही कारण है कि यह धर्म-विशेष के समर्थकों के लिए धर्म का विवेचन नहीं करता है। इसके विपरीत ईश्वर-शास्त्र का दृष्टिकोण व्यावहारिक है। यह धर्म का प्रचार तथा व्याख्या इसीलिए करता है कि इस धर्म के अनुयायियों को इससे लाभ हो।

उपर्युक्त व्याख्या से यह नहीं समझना चाहिए कि धर्म-दर्शन और ईश्वर शास्त्र में अत्यधिक विरोध है। यह ठीक है कि धर्म-दर्शन बुद्धि पर आधारित है और ईश्वर-शास्त्र विश्वास पर, फिर भी दोनों को एक-दूसरे का विरोधी मानना भ्रामक है। इसका कारण यह है कि बुद्धि और विश्वास विरोधात्मक प्रवृत्तियाँ नहीं हैं। बुद्धि में विश्वास का पुट है और विश्वास किसी-न-किसी रूप में बौद्धिक है। धर्म-दर्शन और ईश्वर शास्त्र में परिमाण का अन्तर है। धर्म-दर्शन में बौद्धिकता अधिक है जबकि ईश्वर-शास्त्र में बौद्धिकता कम है।

धर्म-दर्शन और

ईश्वर शास्त्र का आधार आध्यात्मिक है। धर्म दर्शन आध्यात्मिकता की व्याख्या तर्क के माध्यम से करता है जबकि ईश्वर-शास्त्र आध्यात्मिकता की व्याख्या विश्वास के द्वारा करता है।

धर्म-दर्शन और ईश्वर शास्त्र में घनिष्ठ सम्बन्ध है। धर्म-दर्शन एक वृक्ष है तथा ईश्वरशास्त्र उसकी एक शाखा है। जिसप्रकार शाखा वृक्ष पर आधारित है उसीप्रकार ईश्वर-शास्त्र अपनी पूर्णता के लिए धर्म-दर्शन पर आश्रित है अतः दोनों एक दूसरे के पूरक है।

इसप्रकार धर्म-दर्शन एवं ईश्वर-शास्त्र में यही सम्बन्ध है। धर्म-दर्शन एवं ईश्वर-शास्त्र दोनों एक दूसरे की सहायता से अपने क्षेत्र में गतिशील है।